

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 1: श्रीकृष्ण अवतार की भविष्यवाणी

13 September 2026



असह्य भार से पीड़ित होकर पृथ्वी गौ का रूप धारण कर देवताओं की शरण में जाती है — और क्षीरसागर के तट से वह वचन गूँजता है जो संसार का इतिहास बदल देगा: स्वयं परम भगवान् अवतरित होंगे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विङ्गडम् में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। इस अध्याय के साथ हम सम्पूर्ण शास्त्र के हृदय में प्रवेश करते हैं: दशम स्कन्ध, वह ग्रन्थ जो स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण के अवतरण, जीवन तथा लीलाओं का वर्णन करता है। राजा परीक्षित, जिन्होंने श्रीशुकदेव से सूर्य तथा चन्द्र वंशों का इतिहास सुन लिया है, अब और प्रतीक्षा नहीं कर सकते — वे उस भगवान् की कथा सुनने की याचना करते हैं जो यदुवंश में प्रकट हुए। श्रीशुकदेव प्रसन्न होकर आरम्भ से कथा कहते हैं: अभिमानी राजाओं के भार से कराहती पृथ्वी, क्षीरसागर के तट पर देवताओं की प्रार्थना, भगवान् के अवतार का वचन, तथा उस अवतार का श्याम-मय प्रारम्भ — मथुरा के कारागार-नगर में, जहाँ अत्याचारी कंस देवकी के हर सन्तान को नष्ट करने की ताक में है। यह प्रथम अध्याय आगे की समस्त कथा की भूमि तैयार करता है।

अध्याय-पारेचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)
- अध्याय: 1 (प्रथम अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: भगवान् श्रीकृष्ण के अवतार की भविष्यवाणी
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए); राजा परीक्षित (प्रारम्भिक प्रश्न पूछते हुए) — यह सम्पूर्ण कथा सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य की सभा को सुनाई जाती है
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित (श्रीशुकदेव की कथा के भीतर); ऋषि शौनक तथा नैमिषारण्य का ऋषि-समुदाय (सूतजी से सुनते हुए)
- मुख्य स्थान: गंगा-तट, जहाँ श्रीशुकदेव उपवासी राजा परीक्षित को उपदेश देते हैं; कथा के भीतर, क्षीरसागर, तथा यदुओं की राजधानी मथुरा नगरी
- मुख्य विषय-वस्तु: पृथ्वी की पुकार, देवताओं की प्रार्थना तथा भगवान् का अवतार लेने का वचन, वसुदेव-देवकी का विवाह, कंस की मृत्यु की आकाशवाणी, तथा कंस द्वारा दम्पति का बन्दीकरण और उनके पुत्रों का वध
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 10, अध्याय 1, श्लोक 1-69
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

श्रीकृष्ण-कथा सुनने की परीक्षित की उत्कण्ठा

दशम स्कन्ध का आरम्भ किसी वक्ता के आडम्बर से नहीं, अपितु एक भक्त की भूख से होता है। राजा परीक्षित, श्रीशुकदेव के चरणों में बैठे तथा गंगा-तट पर आमरण उपवास करते हुए, ऋषि से कहते हैं कि उन्होंने सूर्य तथा चन्द्र वंशों का विशाल इतिहास और पवित्र यदुओं के अद्भुत कर्म सुन लिए हैं। अब, वे याचना करते हैं, उन भगवान् विष्णु की लीलाओं का वर्णन कीजिए जो श्रीबलराम सहित उसी वंश में अवतरित हुए। वे श्रीशुकदेव को स्मरण कराते हैं कि कैसे भगवान् ने अपने ही व्यक्ति को नौका बनाकर पाण्डवों को कौरव-सेना के सागर से पार उतारा, और कैसे भगवान् ने चक्र हाथ में लिए अपनी माता उत्तरा के गर्भ में प्रवेश कर अश्वत्थामा के अग्निमय अस्त्र से अजन्मे परीक्षित की रक्षा की। ऐसी महिमा के श्रवण से, राजा पूछते हैं, पशुघातक के अतिरिक्त और कौन विमुख हो सकता है?

निवृत्ततर्षैरुपगीयमानाद्भवौषधाच्छ्रोत्रमनोऽभिरामात् ।

क उत्तमश्लोकगुणानुवादात्पुमान् विरज्येत विना पशुघ्नात् ॥ ४ ॥

nivṛtta-tarṣair upagīyamānād bhavauśadhāc chrotra-mano-bhirāmāt ka uttamaśloka-guṇānuvādāt pumān virajyeta vinā paśughnāt

अर्थ: समस्त तृष्णाओं से मुक्त जनों द्वारा गाया जाने वाला, सांसारिक अस्तित्व के रोग की औषधि-स्वरूप, कान तथा मन दोनों को आनन्द देने वाला — पशुघातक के अतिरिक्त और कौन पुरुष उस पवित्र-कीर्ति भगवान् के गुणगान से विमुख हो सकता है? (स्कन्ध 10, अध्याय 1, श्लोक 4)

फिर परीक्षित अनेक प्रश्न पूछते हैं जो सम्पूर्ण स्कन्ध को दिशा देंगे: रोहिणी-पुत्र के रूप में विख्यात बलराम का देवकी के गर्भ से क्या सम्बन्ध रहा? श्रीकृष्ण पिता के घर से व्रज को क्यों गए? व्रज तथा मथुरा में उन्होंने क्या किया? अपनी माता के चचेरे भाई कंस का वध उन्होंने स्वयं क्यों किया? कितने वर्ष वे वृष्णियों के बीच रहे, और उनकी कितनी रानियाँ थीं? श्रीशुकदेव के मुखकमल से बहती श्रीहरि-कथा के अमृत का पान करते हुए, वे कहते हैं कि उन्हें अपने उपवास की भूख भी नहीं सताती। सूतजी नैमिषारण्य के ऋषियों को बताते हैं कि श्रीशुकदेव, इतने श्रेष्ठ प्रश्न पर राजा की प्रशंसा करते हुए, बोले कि भगवान् वासुदेव की कथा की जिज्ञासा तीनों को — वक्ता, प्रश्नकर्ता तथा श्रोता को — उसी प्रकार पवित्र करती है जैसे भगवान् के चरण-स्पर्श से पावन हुआ जल सबको पवित्र कर देता है।

धरती माता की पुकार

भगवान् ने अवतार क्यों लिया, यह बताने के लिए श्रीशुकदेव स्वयं पृथ्वी के कष्ट से आरम्भ करते हैं। अभिमानी, उद्वण्ड राजाओं के रूप में जन्मे असंख्य दैत्य-समूहों के भार से असह्य रूप से पीड़ित होकर, पृथ्वी माता ने एक व्याकुल गौ का रूप धारण किया। अश्रुओं से भीगे मुख के साथ, करुण स्वर में रँभाती हुई, वह सृष्टिकर्ता ब्रह्मा के समीप गई और उनके सम्मुख अपना दुःख निवेदित किया। उसकी विपत्ति को समझकर ब्रह्मा, भगवान् शिव तथा अन्य देवताओं को साथ लेकर, पृथ्वी को साथ लिए तुरन्त क्षीरसागर के तट की ओर चल पड़े — वह धाम जहाँ भगवान् विष्णु शयन करते हैं।



अत्याचारी राजाओं के भार से अभिभूत होकर पृथ्वी माता व्याकुल गौ का रूप धारण कर ब्रह्मा से प्रार्थना करती है, और ब्रह्मा भगवान् विष्णु की शरण जाने का निश्चय करते हैं (श्लोक 17-19)।

क्षीरसागर के तट पर प्रार्थना और भगवान् का वचन

क्षीरसागर पहुँचकर, मन को पूर्णतः एकाग्र कर, ब्रह्मा ने प्रसिद्ध वैदिक स्तोत्र पुरुष-सूक्त के द्वारा परम पुरुष भगवान् विष्णु की स्तुति की। समाधि में लीन ब्रह्मा ने आकाश से एक वाणी सुनी, और तब उसका सन्देश एकत्रित देवताओं को सुनाया: परम पुरुष पृथ्वी माता के कष्ट को पहले से ही जानते हैं; अतः देवगण अंश-रूप में यदुओं के बीच जन्म लें और तब तक वहाँ रहें जब तक स्वयं भगवान् काल-रूपी अपनी शक्ति से पृथ्वी का भार हरने के लिए इस पृथ्वी पर विचरण न करें। स्वयं भगवान् विष्णु, वाणी ने घोषणा की, वसुदेव के घर में प्रकट होंगे।

वसुदेवगृहे साक्षाद् भगवान्पुरुषः परः ।

जनिष्यते तत्प्रियार्थं सम्भवन्तु सुरस्त्रियः ॥ २३ ॥

*vasudeva-gṛhe sākṣād bhagavān puruṣaḥ paraḥ janiṣyate tat-priyārthaṁ sambhavantu sura-
striyaḥ*

अर्थ: परम पुरुष स्वयं भगवान् विष्णु साक्षात् वसुदेव के घर में प्रकट होंगे; अतः उनकी प्रसन्नता के लिए दिव्य स्त्रियाँ भी जन्म लें। (स्कन्ध 10, अध्याय 1, श्लोक 23)

वाणी ने आगे कहा कि सहस्रशीर्ष, स्वयंप्रकाश भगवान् अनन्त — शेष, भगवान् के अंश — उनसे पूर्व उनके बड़े भाई के रूप में प्रकट होंगे, और भगवान् विष्णु की दिव्य माया, जिससे समस्त संसार मोहित है, भी उनका कार्य सम्पन्न करने हेतु अंश-रूप में जन्म लेगी। इस प्रकार देव-समूह को आदेश देकर तथा पृथ्वी माता को आश्वस्त कर, ब्रह्मा अपने धाम लौट गए।



क्षीरसागर के तट पर ब्रह्मा, भगवान् शिव तथा देवगण पुरुष-सूक्त से भगवान् विष्णु की स्तुति करते हैं, और यह वचन पाते हैं कि भगवान् वसुदेव के घर में अवतरित होंगे (श्लोक 20-25)।

वसुदेव और देवकी का विवाह

अब श्रीशुकदेव मथुरा की ओर मुड़ते हैं — यदुओं की प्राचीन राजधानी, जिस पर बहुत पहले शूरसेन का शासन था और जो श्रीहरि की उपस्थिति से सदा पावन रही। उसी नगरी में शूर-पुत्र वसुदेव का देवकी से विवाह हुआ। जब नवविवाहित दम्पति रथ पर विदा हुए, तब राजा उग्रसेन के पुत्र राजकुमार कंस ने अपनी बहन देवकी को प्रसन्न करने के लिए स्वयं घोड़ों की बागडोर सँभाल ली। देवकी के पिता देवक, जो अपनी पुत्री से अत्यन्त स्नेह रखते थे, उसे भव्य दहेज दिया: स्वर्ण-हारों से सजे चार सौ हाथी, पन्द्रह हजार घोड़े, अठारह सौ रथ, और आभूषणों से अलंकृत दो सौ सुन्दर दासियाँ। जब आनन्दमय बारात चली, तब शंख, तुरही, ढोल तथा नगाड़े सब एक साथ अत्यन्त मंगलमय ढंग से बज उठे।



वसुदेव तथा नवविवाहिता देवकी स्वर्ण-रथ में मथुरा से प्रस्थान करते हैं, और कंस स्वयं अपनी बहन का सम्मान करते हुए बागडोर सँभालते हैं, शंख तथा ढोल के मंगल-नाद के बीच (श्लोक 29-33)।

आकाशवाणी

यह मंगल-क्षण अदृश्य से आई एक चेतावनी से भंग हो गया। जब कंस मार्ग पर रथ हॉक रहे थे, तब आकाश से एक अशरीरी वाणी ने उन्हें सम्बोधित किया।

पथि प्रग्रहिणं कंसमाभाष्याहाशरीरवाक् ।

अस्यास्त्वामष्टमो गर्भो हन्ता यां वहसेऽबुध ॥ ३४ ॥

pathi pragrahiṇaṁ kaṁsam ābhāṣyāhāsarīra-vāk asyās tvām aṣṭamo garbho hantā yāṁ vahase 'budha

अर्थ: मार्ग में बागडोर थामे कंस को सम्बोधित करते हुए उस अशरीरी वाणी ने कहा: “अरे मूढ़! इसी कन्या का, जिसे तू अभी ले जा रहा है, आठवाँ गर्भ तेरा वध करेगा।” (स्कन्ध 10, अध्याय 1, श्लोक 34)

यह सुनकर कंस — भोजवंश का कलंक, स्वभाव से दुष्ट तथा क्रूर — ने तुरन्त अपनी बहन को केशों से पकड़ लिया और तलवार हाथ में लिए वहीं उसका वध करने को उद्यत हो गया। तभी वसुदेव उनके बीच आए और उस कठोर-हृदय व्यक्ति से अपनी वधू को छोड़ देने की याचना करने लगे।

वसुदेव की याचना और मृत्यु पर उपदेश

वसुदेव की यह याचना भागवत के महान् संक्षिप्त उपदेशों में से एक है। भला, उन्होंने पूछा, गुणों के लिए प्रशंसित तथा भोजों का गौरव वीर एक असहाय स्त्री का — अपनी ही बहन का — उसी के विवाह के उत्सव पर वध कैसे कर सकता है? फिर उन्होंने एक गहन सत्य की ओर मुड़कर कहा: जन्म लेने वाले हर प्राणी के साथ, उन्होंने कहा, मृत्यु भी जन्म लेती है।

मृत्युर्जन्मवतां वीर देहेन सह जायते ।

अद्य वाब्दशतान्ते वा मृत्युर्वै प्राणिनां ध्रुवः ॥ ३८ ॥

mṛtyur janmavatām vīra dehena saha jāyate adya vābda-śatānte vā mṛtyur vai prāṇinām dhruvaḥ

अर्थ: हे वीर, जन्म लेने वाले समस्त प्राणियों के लिए मृत्यु शरीर के साथ ही जन्म लेती है। चाहे वह आज आए अथवा सौ वर्ष के अन्त में, समस्त प्राणियों के लिए मृत्यु निश्चित है। (स्कन्ध 10, अध्याय 1, श्लोक 38)

देहधारी आत्मा, वसुदेव ने समझाया, एक शरीर तभी छोड़ती है जब वह दूसरे को ग्रहण कर लेती है — जैसे चलता हुआ मनुष्य पहला पैर धरती पर रखकर ही दूसरा उठाता है, अथवा जैसे इल्ली अगले तिनके को पकड़कर ही पिछले को छोड़ती है। जैसे स्वप्न देखने वाला अथवा किसी कामना में लीन व्यक्ति उसी रूप से तादात्म्य कर लेता है जिसका उसका मन चिन्तन करता है, वैसे ही आत्मा, भाग्य से प्रेरित होकर, उसी शरीर में प्रवेश करती है जिसकी ओर उसका मन बहता है। अतः, उन्होंने आग्रह किया, अपने कल्याण की कामना करने वाले को कभी किसी प्राणी की हिंसा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि अपराध अपराधी पर ही लौटता है। यह कन्या, उन्होंने विनती की, कंस के लिए पुत्री के समान है; असहायों पर दयालु व्यक्ति को उसके विवाह-दिवस पर उसका वध नहीं करना चाहिए।



तलवार लिए कंस के सम्मुख खड़े वसुदेव देवकी के प्राणों की भिक्षा माँगते हैं और यह शाश्वत उपदेश देते हैं कि मृत्यु अवश्यम्भावी है तथा आत्मा एक शरीर से दूसरे शरीर में जाती रहती है (श्लोक 36-45)।

एक पिता का भयंकर समझौता

कठोर-हृदय कंस, जो राक्षसों की रीति पर चलता था, नहीं माना। यह देखकर वसुदेव — जिन्हें आनकदुन्दुभि भी कहा जाता है — ने एक उपाय सोचा। बुद्धिमान् मनुष्य को, उन्होंने मन में विचारा, जब तक बुद्धि तथा बल शेष हैं, मृत्यु को टालने का प्रयास करना चाहिए; और यदि मृत्यु न टले, तो प्रयास करने वाले का कोई दोष नहीं। वे देवकी से जन्मने वाले प्रत्येक पुत्र को कंस को सौंपने का वचन देंगे; इस समय उसका जीवन बच जाएगा, और पुत्रों की हानि तो केवल भविष्य की सम्भावना है — क्योंकि सम्भव है कंस पहले ही मर जाए, अथवा सन्तानें ही न हों, क्योंकि विधाता की गति दुर्ज्ञेय है। मुसकाते मुख किन्तु व्यथित हृदय से वसुदेव ने उस अत्याचारी की प्रशंसा की और उसके सम्मुख यह प्रस्ताव रखा: इस कन्या से तुझे कोई भय नहीं; तू तो इसके पुत्रों से डरता है, और वे मैं तुझे सौंप दूंगा। कंस, वसुदेव को सत्यवादी जानकर, देवकी का वध करने से रुक गया, और वसुदेव घर लौट आए।

समय आने पर देवकी ने, जो अपने में समस्त देवताओं को धारण करती थीं, प्रतिवर्ष एक-एक कर आठ पुत्रों तथा एक पुत्री को जन्म दिया। अपने भयंकर वचन के प्रति निष्ठावान् तथा असत्य से सर्वाधिक घृणा करने वाले वसुदेव ने अपने प्रथम पुत्र, कीर्तिमान् नामक शिशु को, कंस के पास पहुँचाया। श्रीशुकदेव पूछते हैं — धर्मात्माओं के लिए क्या असह्य है, अथवा जिन्होंने श्रीहरि को हृदय में बसा लिया है उनके लिए क्या त्यागना कठिन है? वसुदेव की समता तथा सत्य के प्रति अटल निष्ठा से चकित होकर कंस उस क्षण के लिए नरम पड़ गया और बोला, “यह बालक तुझे लौटा देता हूँ; इससे मुझे भय नहीं। मेरी मृत्यु तो तेरे आठवें गर्भ के हाथों नियत है।” वसुदेव ने बालक वापस ले लिया, किन्तु वे प्रसन्न न हुए, क्योंकि उस दुष्ट राजा के वचनों पर उन्हें विश्वास न था।



अपने वचन पर अटल तथा असत्य से घृणा करते हुए वसुदेव अपने नवजात प्रथम पुत्र को कंस के पास ले जाते हैं, और ऐसी दृढ़ता पर कंस का विस्मय उसे उस क्षण के लिए बालक को छोड़ देने को प्रेरित करता है (श्लोक 55-61)।

नारद का आगमन और कंस का क्रूरता में पतन

यह अस्थिर शान्ति टिकी नहीं। देवर्षि नारद स्वयं कंस के पास आए और उसे बताया कि नन्द के नेतृत्व में व्रज के गोप, उनकी पत्नियाँ, वसुदेव के नेतृत्व में वृष्णि, तथा देवकी के नेतृत्व में यादव स्त्रियाँ — वस्तुतः दोनों कुलों के समस्त सम्बन्धी तथा मित्र — अधिकांशतः देवता ही हैं, और देवगण पृथ्वी से दैत्य-भार हरने का प्रयत्न कर रहे हैं। अब यह मानकर कि यदु देवता हैं और विष्णु उसका वध करने देवकी के गर्भ से प्रकट होंगे,

कंस ने देवकी तथा वसुदेव दोनों को उनके ही निवास में बेड़ियों से बाँध दिया, और उनके प्रत्येक पुत्र को जन्मते ही, उसे भगवान् समझकर, मार डाला। श्रीशुकदेव कहते हैं कि अपने भोग में लीन लोभी राजा पिता, माता तथा भाइयों तक का वध कर डालते हैं। यह जानते हुए कि वह पूर्वजन्म में विष्णु द्वारा मारा गया महान् दैत्य कालनेमि था, कंस ने यदुओं से खुला वर ठान लिया। उसने अपने ही पिता उग्रसेन को — यदुओं, भोजों तथा अन्धकों के स्वामी को — बन्दी बना लिया और शूरसेन-राज्य का शासन स्वयं हड़प लिया।

उग्रसेनं च पितरं यदुभोजान्धकाधिपम् ।

स्वयं निगृह्य बुभुजे शूरसेनान् महाबलः ॥ ६९ ॥

ugrasenam ca pitaram yadu-bhojāndhakādhīpam svayam nigṛhya bubhuje śūrasenān mahā-balaḥ

अर्थ: अपने ही पिता उग्रसेन को, जो यदुओं, भोजों तथा अन्धकों के शासक थे, बन्दी बनाकर महाबली कंस ने स्वयं शूरसेन के राज्य को हड़पकर भोगा। (स्कन्ध 10, अध्याय 1, श्लोक 69)

इसी के साथ रंगमंच पूर्णतः सज गया: कराहती पृथ्वी, प्रतिज्ञात उद्धारक, और भविष्यवाणी से इतना भयभीत एक अत्याचारी कि उसने अपनी ही राजधानी को कारागार बना दिया। इसी अन्धकार में भगवान् अवतरित होने वाले हैं।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान् का श्रवण उससे स्पर्शित सबको पवित्र करता है। श्रीशुकदेव परीक्षित को आश्चस्त करते हैं कि भगवान् वासुदेव की कथा की जिज्ञासा वक्ता, प्रश्नकर्ता तथा श्रोता — सभी को पवित्र करती है; कृष्ण की ओर अपना ध्यान मोड़ने का कार्य ही पावन करने वाला है (श्लोक 15-16)।
2. भगवान् संसार का भार हरने के लिए अवतरित होते हैं। कृष्ण का अवतार निरर्थक नहीं; वह शक्तिशाली लोगों के अहंकार से पीड़ित पृथ्वी माता की पुकार का उत्तर है। भगवान् धर्मात्माओं की रक्षा तथा पृथ्वी का भार हल्का करने प्रकट होते हैं (श्लोक 17-25)।
3. मृत्यु निश्चित है, और आत्मा कभी नष्ट नहीं होती। वसुदेव की याचना में गीता का सार है: जो जन्मा है वह अवश्य मरेगा, और आत्मा अपने भाग्य के अनुसार एक शरीर से दूसरे में जाती रहती है (श्लोक 38-43)।
4. किसी की हिंसा न करें, क्योंकि अपराध करने वाले पर ही लौटता है। क्योंकि हर आत्मा मृत्यु के भय का सामना करती है, अपने सच्चे कल्याण की कामना करने वाले को कभी किसी की हिंसा नहीं करनी चाहिए; हिंसा हिंसक पर ही पलटती है (श्लोक 44)।
5. सत्य के प्रति निष्ठा सर्वाधिक मूल्य पर भी अटल रह सकती है। असत्य से घृणा करते हुए वसुदेव अपना भयंकर वचन निभाते हैं और अपने प्रथम पुत्र को सौंप देते हैं — दृढ़ता का ऐसा चित्र जिसकी उसका शत्रु भी प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता (श्लोक 55-58)।

एक भाक्तेपूर्ण चिन्तन

यह बात मर्मस्पर्शी है कि कृष्ण की मधुरता के लिए सर्वाधिक प्रिय ग्रन्थ का आरम्भ एक कारागार में होता है। वृन्दावन के बालक से मिलने से पूर्व ही हमें एक पीड़ित संसार का भार तथा एक भयभीत राजा की क्रूरता दिखाई जाती है। सम्भवतः यही इसका मर्म है। भगवान् किसी सुगम संसार में नहीं, अपितु एक टूटे हुए संसार में अवतरित होते हैं — बेड़ियों, भय तथा शोक के बीच — और वहीं, मथुरा की सबसे अन्धकारमय कोठरी में, वह ज्योति प्रकट होगी। इस सबके बीच वसुदेव की स्थिरता स्वयं एक शिक्षा है: वे न तो अपने पुत्रों को बचाने के लिए सत्य त्यागते हैं, न उस भगवान् को कोसते हैं जो अभी नहीं आए हैं। वे बस अगला उचित कार्य करते जाते हैं, यह विश्वास करते हुए कि “विधाता की गति दुर्जेय है।” जब हमारा अपना जीवन एक बन्द कोठरी-सा प्रतीत हो, तब यह अध्याय स्मरण कराता है कि भगवान् का अवतार प्रायः ठीक वहीं आरम्भ होता है जहाँ आशा सर्वाधिक असम्भव लगती है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, किसी भी चिन्ताजनक या कठिन कार्य के आरम्भ से पहले, रुककर वसुदेव के इस विश्वास का स्मरण करें कि “जो निकट है वह टल सकता है, और जो टल गया है वह पुनः आ सकता है।” जो आपके वश में नहीं, उसे कोमलता से भगवान् को सौंप दें, और फिर बस अपने सम्मुख का अगला ईमानदार कार्य करें। एक क्षण मौन में बैठें और दोहराएँ: “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” वह नाम — वही घर जिसमें भगवान् ने जन्म लेना चुना — अनिश्चितता के बीच आपके हृदय को स्थिर करे।

उपसंहार

दशम स्कन्ध का प्रथम अध्याय भगवान् श्रीकृष्ण के सम्पूर्ण जीवन में प्रवेश का द्वार है। यह हमें उनके आगमन का कारण देता है — पृथ्वी माता की पुकार तथा देवताओं की प्रार्थना — और वह मानवीय नाट्य जिसमें वे जन्म लेंगे: वसुदेव-देवकी का विवाह, यह भयावह भविष्यवाणी कि आठवाँ पुत्र कंस का वध करेगा, तथा अत्याचारी का भय, बन्दीकरण और क्रूरता में पतन। श्रीशुकदेव ने क्षीरसागर के वचन से लेकर मथुरा-महल की बेड़ियों तक प्रत्येक अंश यथास्थान रख दिया है। अब केवल स्वयं भगवान् का प्रकट होना शेष है। कृष्ण-अवतार की देहरी पर खड़े हम अपने साथ वसुदेव के अटल विश्वास तथा परीक्षित की भगवान्-कथा सुनने की अतृप्त तृष्णा को लिए चलते हैं।

श्रीमद्भागवतम् की दिव्य ज्ञान-ज्योति हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति को जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ तथा आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), प्रथम अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिखाए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक द्वारा संबद्धता अथवा समर्थन का कोई भाव नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-1-advent-of-lord-krishna-foretold-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

